ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
PP. No.- 90-93

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- II, Issues-28, YEAR- April-June-2023

पारिवारिक प्रतिमानों को पुनः परिभाषित करती सोशल मीडिया : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

1. माधुरी
2. डॉ0 यतीन्द्र मिश्रा

1. शोध अध्येत्री, 2. सह–आचार्य एवं शोध निर्देशक, डॉ0 बी0आर0 अम्बेडकर, समाज विज्ञान संस्थान, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी (उ0प्र0), भारत

Received-17.04.2023, Revised-22.04.2023, Accepted-26.04.2023 E-mail: madhuripanchalbed@gmail.com

सारांशः ***नयी तकनीकि के रुप में सोशल मीडिया आधुनिक समय में समाज में आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक संरचना को प्रभावित और परिवर्तित कर रही है, जिसका प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष प्रभाव परिवार एवं परिवार के प्रतिमानों पर पड़ रहा हैं। इस अध्ययन का उद्देश्य पारम्परिक भारतीय समाज में बदलते परिवारों के प्रतिमानों में सोशल मीडिया की भूमिका का अध्ययन करना है, क्योंकि सोषल मीडिया हालिया समय में सूचना और सम्प्रेषण का सबसे बड़ा माध्यम बन गया है। परिणाम से ज्ञात हुआ है कि पारिवारिक प्रतिमानों के प्रति सोशल मीडिया के नकारात्मक परिणाम सकारात्मक परिणाम की अपेक्षा अधिक पाये गये है। अध्ययन का परिणाम पारिवारिक प्रतिमानों को पुनः परिभाषित करने में सोशल मीडिया की महत्वपूर्ण भूमिका की ओर संकेत देता है।***

कुंजीभूत शब्द– सोशल मीडिया, पारिवारिक प्रतिमान, पुनः परिभाषित, आधुनिक समय, सामाजिक, राजनीतिक ,सांस्कृतिक संरचना।

वर्तमान परिदृश्य में नयी तकनीकि अविष्कारों ने देश समाज को एक ऐसे दौर में ला दिया है जहाँ उसका प्रत्येक पहलू परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है, वही अगर परिवार की बात करे तो यह अपना मूल स्वरुप खोता जा रहा है। आज जिस कदर सोशल मीडिया का प्रयोग परिवारों में बढ़ रहा है उसके अनेक प्रभाव सामने आ रहे है।

इन्टरनेट एपलीकेशन के प्रयोग से जहाँ सोशल मीडिया में परिवर्तन आ रहा है, वहीं यह लोगों के जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा बनती जा रही है और यह व्यक्तिगत एवं सामाजिक दोनों ही स्तर पर सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव डाल रही है। साथ ही यह हमारी भावनाओं को प्रभावित कर रही है। (Oh et al., 2020) राजनीतिक भागीदारी (Boulienne, 2019), शिक्षा (Sh et al., 2020) और नागरिक जीवन (Boulianne, 2019) पारिवारिक सम्बन्ध (Tanveer Hussain et al., 2020) तथा दोस्तों एवं परिवार में सम्प्रेषण के तरीके को नया रुप दे रही है, जिससे परिवार के सदस्यों के व्यवहार के तरीकों में काफी परिवर्तन आया है और इन सबका प्रभाव परिवार के प्रतिमानों (व्यवहार, आदर, सम्मान, भाईचारे, एकजुटता इत्यादि) पर पढ़ रहा है। आज इन प्रतिमानों को देखकर लगता है कि यह इतने बदल गए है कि इनको पुनः परिभाषित करने की आवश्यकता है।

सोशल मीडिया– शब्द 'सोशल मीडिया' इन्टरनेट आधारित नेटवर्क को सन्दर्भित करता है जो उपयोगकर्ताओं को मौखिक और दृष्टिगत रुप से दूसरों के साथ बातचीत में सशक्त बनाता है (कैर एण्ड हेस, 2015)। आभाषी समुदाओं और नेटवर्क के माध्यम से सूचना विचारों, रूचियों और अभिव्यक्ति के अन्य रूपों के निर्माण और साक्षा करने की अनुमति की सुविधा प्रदान करने वाली सोशल मीडिया, इंटरएक्टिव प्रौद्योगिकियां है।

मरियम वेबस्तर ने सोशल मीडिया को ''इलैक्ट्रॉनिक संचार के रूपों (जैसे– सोशल नेटवर्किंग और माइक्रोब्लॉगिंग के लिए वेबसटर) के रुप में परिभाषित किया जिसके माध्यम से उपयोगकर्ता जानकारी, विचार व्यक्तिगत संदेश और अन्य सामग्री (जैसे– वीड़ियों) साक्षा करने के लिए ऑनलाइन समुदाय बनाते है।''

विभिन्न प्लेटफॉर्म– सोषल मीडिया के प्लेटफॉर्म की एक बड़ी रैंज है जैसे– फेसबुक, ट्वीटर, लिकडन, इंस्ट्राग्राम, स्नैपचैट, व्हाट्सएप, माईस्पेस, क्यूकोन, बीवो, वीचैट इत्यादि। भारतीय सन्दर्भ में उपयोगकर्ताओं की संख्या और फीचर्स (विषेशताओं) के प्रकारों के आधार पर फेसबुक और ब्हाट्सएप दोनों सबसे लोकप्रिय प्लेटफॉर्म है। बढ़ते डिजिटलीकरण और कम कीमतों के कारण पूरे भारत में 467 मिलियन सक्रिय सोशल मीडिया उपयोगकर्ता थे, जिसमें व्हाट्सएप सन् 2022 में लगभग 76 प्रतिशत के साथ सबसे लोकप्रिय प्लेटफॉर्म रहा।

भारत में (2023) के 5 सबसे लोकप्रिय सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म

क्रमांक	प्लेटफॉर्म	उपयोगकर्ता
1.	व्हाट्सएप	531.46 मिलियन
2.	इंस्टाग्राम	516.92 मिलियन
3.	फेसबुक	492.70 मिलियन
4.	टेलीग्राम	384.06 मिलियन
5.	मेसेन्जर	343.92 मिलियन

स्रोत– The Global Statistics https://www.theglobalstatistics.com

सोशल मीडिया के जन्म एवं विकास की शुरूआत डिजिटल इमेजिंग और सेमीकंडक्टर इमेज सेंसर तकनीकि से हुई। इसका प्रयोग सर्वप्रथम कॉलेजों एवं मिलिट्री में संवाद को बढ़ाने के लिए किया गया था। सोशल मीडिया का विकासक्रम सरल प्लेटफॉर्म से शुरू हुआ। जियोसिटीज नवम्बर, 1994 में शुरू की गई सबसे शुरूआती सोशल नेटवर्किंग सेवाओं में से एक थी, इसके बाद दिसम्बर 1955 में क्लासमेट्स डॉट कॉम और मई, 1997 में सिम्सडिग्रीस डॉट कॉम आदि। 2004 में फेसबुक एवं ट्वीटर का विकास किया गया तथा 2005 से पूरे विश्व में सभी नेटवर्किंग साइटों का शुभारम्भ किया गया। वर्तमान में सोशल मीडिया के बढ़ते उपयोग ने पूरे समाज

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- II, Issues-28, YEAR- April-June-2023

में क्रान्ति ला दी है। 2015 के एक शोध से पता चलता है कि दुनिया के अपने ऑनलाइन समय का 22 प्रतिशत सोशल नेटवर्किंग पर बिताया जाता है।

पारिवारिक प्रतिमान– प्रतिमान या मानदण्ड संस्कृतियों में बोले जाने वाले अमूर्त नियम है जो समय के साथ प्रबल होकर परिवार के सदस्यों के व्यवहार पर नियंत्रण के रुप में कार्य करते हैं, जिस प्रकार समाज में व्यवस्था को सुचारू रुप से चलाने के लिए एवं नियंत्रण बनाए रखने के लिए सामाजिक प्रतिमानों (प्रथाओं, रीति–रिवाजों, परिपाटियों, रुढ़ियों, कानूनो आदि) का होना अनिवार्य है। ठीक वैसे ही पारिवारिक व्यवस्था के सफल संचालन एवं अस्तित्व के लिए भी प्रतिमानों (विवाह, व्यवहार, आचरण आदि) की आवश्यकता होती है।

यंग के अनुसार परिवार से सम्बन्धित कुछ प्रतिमान निम्नलिखित है–

1. बात करते समय 'कृपया' और 'धन्यवाद' कहना।
2. बड़ों की बात सुनना।
3. अपने भाई–बहनों और चचरे भाई–बहनों के साथ प्यार और सम्मान के साथ पेश आना।
4. बड़ों की आज्ञा का पालन बिना कोई बात पूछे करना।
5. माता–पिता की बात करने पर पीछे से बात न करना।
6. पारिवारिक समारोहों में सम्मिलित होना और ध्यान देना।
7. दूसरों का सम्मान करना।
8. पारिवारिक 'गोपनीयता' एवं 'रहस्य' बनाए रखना।
9. अपने माता–पिता या अभिभावकों द्वारा किए गए बलिदान की सराहना करना।
10. परिवार के विशेष अवसरों (जन्मदिन, सालगिरह आदि) को एक साथ मिलकर मनाना।
11. पारिवारिक परम्पराओं को साझा करना।

समाजशास्त्रीय अर्थ में प्रतिमान से तात्पर्य व्यवहार की ऐसी साझा प्रत्याक्षाओं एवं अपेक्षाओं से है जिन्हें सांस्कृतिक दृष्टि से वांछनीय या उपयुक्त माना जाता है। जनरीतियां, रूढ़ियां, प्रथाएं, लोकाचार, परिपाटियाँ, मूल्य एवं कानून सभी प्रतिमानी के ही विभिन्न रुप है। प्रकार्यात्मक सिद्धान्त के अनुसार माना जाता है कि प्रतिमान ऐसे विश्वास है जो बताते हैं कि अमुक व्यक्ति को क्या करना चाहिए और क्या नहीं। इस सिद्धान्त की मान्यतानुसार प्रतिमान समाज में व्यवस्था का निर्माण करते हैं। (रावत, 2008) प्रसिद्धि समाजशास्त्री रॉबर्ट बीरस्टीड ने सभी प्रकार के प्रतिमानों को तीन श्रेणियों में विभाजित किया है। यथा– जनरीतियां, रूढ़ियां, कानून। बीरस्टीड के अनुसार "सामाजिक प्रतिमान एक प्रकार का प्रमाणित कार्यप्रणाली का रुप है, यह कार्य सम्पन्न करने का एक तरीका है जो हमारे समाज में स्वीकृत है।" (सिंधी एवं गोस्वामी : 2006) इस प्रकार अधिकांश लोगों द्वारा किया जाने वाला तरीका जो समाज द्वारा स्वीकृत है, प्रतिमान की श्रेणी में आता है।

साहित्य की समीक्षा– सोशल मीडिया से सम्बन्धित बहुत से तौर–तरीके एवं व्यवहार प्रतिमान वर्तमान समय में समाज एवं परिवार द्वारा स्वीकृति पाने लगे हैं, जिससे समाज एवं परिवार में नए–नए प्रतिमान उत्पन्न होते जा रहे हैं। सोशल मीडिया से सम्बन्धित अध्ययन अध्यापन की दिशा में विगत कुछ दशकों में बदलाव आया है। साथ ही व्यापक स्तर पर इसके प्रति आकर्षण के कारण अध्ययन कार्य की सम्भावनाएं बढ़ने लगी है। सोशल मीडिया इंटरनेट आधारित नेटवर्क है जो उपयोगकर्ताओं को मौखिक और दृष्टिगत रुप से बातचीत को सशक्त बनाता है। (कैर एण्ड हैस, 2015), सोशल मीडिया लोगों के जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा बनती जा रही है और यह सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों ही रूपों में हमारी भावनाओं को प्रभावित कर रही है। (Oh et al., 2020) सोशल मीडिया का बढ़ता उपयोग नागरिक जीवन को विभिन्न तरीके से प्रभावित कर रहा है। (Boulianne, 2019) और पारिवारिक जीवन में अपनी व्यापक पहुँच के साथ सोशल मीडिया पारिवारिक सम्बन्धों को भी परिवर्तित कर रही है। (Tanveer Hussain et al., 2020) इस प्रकार पूर्व अध्ययनों की समीक्षा से स्पष्ट है कि पारिवारिक प्रतिमानों को परिवर्तित करने में सोशल मीडिया महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

समस्या का कथन– भारतीय समाज में अचानक से उत्पन्न और बढ़ते सोशल मीडिया के उपयोग से अनेक समस्याएं सामने आ रही है। "पारिवारिक प्रतिमानों को पुनः परिभाषित करती सोशल मीडिया" एक ऐसी ही समस्या है जिसकी गम्भीरता का अनुभव पूर्व के अध्ययनों के समीक्षात्मक विश्लेषण के आधार पर लगाया जा सकता है। समस्या की गम्भीरता को देखते हुए इस विषय पर अध्ययन किए जाने की महत्वपूर्ण आवश्यकता है।

अध्ययन का उद्देश्य–

1. मुख्य उद्देश्य– प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य भारतीय परिदृश्य में बदलते पारिवारिक प्रतिमानों में सोशल मीडिया की भूमिका का अध्ययन एवं विश्लेषण करना है।

2. अन्य उद्देश्य– पारिवारिक प्रतिमानों में क्या–क्या परिवर्तन परिलक्षित हुआ है, इसका अध्ययन करना।

अध्ययन की प्रविधि– प्रस्तुत अध्ययन में अध्ययनकर्त्री द्वारा द्वितीयक तथ्यों का उपयोग करते हुए विषय का विश्लेषण किया जाएगा, जिसमें विषय से सम्बन्धित पूर्व अध्ययनों, समाचार पत्र, पत्रिकाओं आदि में प्रकाशित लेखों एवं भारत सरकार द्वारा जारी की जाने वाली रिपोर्टों का आलोचनात्मक विश्लेषण किया जाएगा।

सोशल मीडिया से परिवर्तित होते पारिवारिक प्रतिमान– वर्तमान भारतीय परिदृश्य में जिस तीव्रगति से सोशल मीडिया का

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- II, Issues-28, YEAR- April-June-2023

उपयोग किया जा रहा है, उससे अनेक परिवर्तन दृष्टिगोचर हो रहे है, जिनमें से एक है– पारिवारिक प्रतिमानों में परिवर्तन। सोशल मीडिया ने बड़े पैमाने पर पारिवारिक प्रतिमानों में परिवर्तन लाने का कार्य किया है। परम्परागत भारतीय परिवार जो पहले परम्परागत मूल्यों एवं मानकों में विश्वास करते थे, उसमें सोशल मीडिया के उपयोग के कारण परिवर्तन दिखाई देने लगे हैं।

आज जिस प्रकार की घटनाएं हमारे सामने आ रही है उनसे स्पष्ट होता है कि पारिवारिक प्रतिमानों में कितनी कमी आ रही है। जिस प्रकार आज हम देखते हैं कि लिव इन रिलेशन दो लोग (महिला एवं पुरुष) बिना विवाह किए ही एक साथ रह रहे है या फिर एक ही सैक्स के लोग सम्बन्ध बना रहे है (गे रिलेशनशिप) या फिर एकल अभिभावक परिवार आदि ऐसी घटनाएं है जिनको देखकर लगता है कि परिवार में विवाह रूपी संस्था से सम्बन्धित मानदण्डों में काफी परिवर्तन आया है। जहां परम्परागत रूप में पति–पत्नी के आपसी रिश्ते को जन्म जन्मान्तर का बंधन माना जाता था। आज उस सम्बन्ध को अपराध की श्रेणी में लाए जाने की मांग हो रही है। (दैनिक जागरण 21 जनवरी, 2022)

सोशल मीडिया के विभिन्न प्लेटफॉर्म पर बढ़ती व्यवस्तता और आभाषी जीवन की ओर जाते परिवार के युवा सदस्यों में अपने बड़ों (माता–पिता, दादा–दादी) को व्यवहार करने और उनका सम्मान करने में काफी परिवर्तन आया है जिसका परिणाम हम वृद्ध आश्रमों की बढ़ती संख्या के आधार पर देख सकते हैं। वर्तमान समय में देखे तो सोशल मीडिया की पैठ परिवार में धार्मिक प्रतिमानों में भी काफी देखने को मिल रही है। आज पारिवारिक पूजा पाठ को तकनीकि रूप से सम्पन्न किया जा रहा है। भजन संध्या हो या कीर्तन, सत्संग सभी को तकनीकि से जोड़ दिया गया है, जिसके परिणाम स्वरूप परिवार के बच्चों में पूजा पाठ के प्रति जो आन्तरिक चेतना होती है उसकी कमी होती जा रही है।

परिवार के प्रतिमान के रूप में (सदस्यों का एक–दूसरे के प्रति निश्ठापूर्ण रहना, बच्चों का बड़ों के आने पर उठकर प्रणाम करना, गलती होने पर क्षमा मांगना, मेहमानों का सत्कार करना, वस्त्र धारण करना, पैर छूना इत्यादि) में काफी परिवर्तन आया है। पूर्व के अध्ययनों से भी यही निष्कर्ष सामने आया है कि सोशल मीडिया के उपयोग के साथ पारिवारिक प्रतिमानों में सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों ही स्तरों में परिवर्तन आया है। इस प्रकार स्पष्ट है कि पारिवारिक प्रतिमानों की पुनः परिभाषित करने में सोशल मीडिया की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

सुझाव– मानदण्ड अलिखित सामाजिक नियम होते है जो बताते है कि कुछ स्थितियों में व्यक्तियों से व्यवहार की क्या अपेक्षा की जाती है। प्रतिमान परिवार एवं समाज की प्राण शक्ति होती है, जिस पर उस परिवार एवं समाज का भविष्य निर्भर करता है। वहीं अगर तकनीकि (सोशल मीडिया) की बात करें तो नए–नए तकनीकि अविष्कार समाज के अधिक विकास का एक महत्वपूर्ण पैमाना होता है। अतः इनमें तालमेल होना आवश्यक है। इसके लिए कुछ सुझाव निम्नलिखित हैं–

1. भारतीय परिवारों में सोशल मीडिया का उपयोग बढ़ता ही जा रहा है। जिसका नकारात्मक प्रभाव उनके मानदण्डों पर एक गम्भीर समस्या बन गया है। इससे सम्बन्धित कुछ अध्ययन भी हुए है, लेकिन अभी भी सीमित आँकड़ों की ही उपलब्धता है। अ त : इस समस्या पर और अध्ययन किए जाने की आवश्यकता है।
2. वर्तमान में तकनीकि जिस तीव्रगति से परिवर्तित होकर नए–नए रूपों में हमारे सामने आ रही है उसके विषय में परिवार के सदस्यों को जानकारी उपलब्ध करायी जाए, जिससे वह इसमें सकारात्मक उपयोग कर सकें।
3. पूर्व अध्ययनों से स्पष्ट है कि सोशल मीडिया ने परिवार के प्रतिमानों को काफी हद तक परिवर्तित किया है। इसीलिए परिवार के सदस्यों को सोशल मीडिया के सीमित उपयोग के लिए प्रेरित किया जाए और उनमें पारम्परिक प्रतिमानों के प्रति आचरण करने की भावना विकसित की जाए।
4. परिवार के बड़ों (दादा–दादी, माता–पिता आदि) द्वारा अपने बच्चों को परिवार के रीति–रिवाजों, परम्पराओं और परिपातियों के विषय में ज्ञान उपलब्ध कराया जाए, जिससे आने वाले समय में बच्चे प्रतिमानों के अनुरूप व्यवहार करें।
5. परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब भी कोई पारिवारिक एवं धार्मिक उत्सव आए तो अपने बच्चों को उसमें शामिल करे तथा पारिवारिक उत्सवों की महत्वता को समझाएं।
6. पूर्व अध्ययनों के परिणामों से स्पष्ट है कि इस समस्या को अनदेखा करना हमारे भविष्य में बढ़ी समस्याओं को बुलावा देना है। अतः इसके लिए व्यक्तिगत स्तर से लेकर पूरे विश्व स्तर पर उचित प्रयास करने की आवश्यकता है तभी हम अपने पारम्परिक प्रतिमानों को सहेज कर रख पाएंगे।

निष्कर्ष– इस अध्ययन का उद्देश्य बदलते पारिवारिक प्रतिमानों में सोशल मीडिया की भूमिका को रेखांकित करना था। अध्ययन में सामने आया कि सोशल मीडिया पारिवारिक प्रतिमानों को पुनः परिभाषित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। एक तकनीकि उपकरण के रूप में सोशल मीडिया के पारिवारिक सदस्यों के जीवन में सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों ही प्रभाव देखे गए। एक तरफ जहाँ इसके उपयोग से लोगों की काफी सुविधाएं मिली है वहीं दूसरी ओर इसके कुछ दुष्परिणाम भी सामने आए है। इनमें पारम्परिक पारिवारिक प्रतिमानों में परिवर्तन आना प्रमुख समस्या है। (कैर एण्ड हैस, 2015), (Oh et al., 2020), (Boulianne, 2019) और (Tanveer Hussain et. 2020)।

इन अध्ययनों के विश्लेषण के आधार पर ही हमने पाया कि सोशल मीडिया के उपयोग से परिवार एवं पारिवारिक प्रतिमानों में परिवर्तन आ रहा है। जैसे– विवाह से सम्बन्धित प्रतिमान में, व्यवहार से सम्बन्धित प्रतिमान में, आदा सम्मान से सम्बन्धित प्रतिमान आदि। इस प्रकार स्पष्ट कहा जा सकता है कि पारिवारिक प्रतिमानों को पुनः परिभाषित करने में सोषल मीडिया ने महत्वपूर्ण भूमिका

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- II, Issues-28, YEAR- April-June-2023

अदा की है, जिसका समर्थन इस अध्ययन का परिणाम भी करता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Hussain Tanveer et. (2020), Family Relation after the Emergence of Social Media : A Comparative Analysis of single family and joint family systems Global Regional Review, Vl. 544-551.
2. Oh, S., H, Lee, S.V. and Alan, C. (2020), The Effects of Social Media use on Preventive Behaviors during Infectious Disease Outbreaks. The Modiating role of self relevant Emotions and public risk perception. Health Communication 1-10.
3. Shi, C., Yu, L., Wang, N., Cheng, B and Cao, X. (2020), Effects of Social Media overload on academic performance : A stress on strain outcome perspective, Asian Journal of Communication, 30(2), 179-197.
4. Boulianne, S., (2019). Revolution in the making ? Social Media effects across the glone, Information Communica tion and Society 22(1) 39-54.
5. Hooela, Sonia (2018), Study of Social Media a Dynomics in Inducing Relational Differentiations in Interpersonal Relationships.
6. यंग, एच0पी0 (2007) सामाजिक मानदण्ड।
7. रावत, हरिकृष्ण (2006) उच्चतर समाजशास्त्र विश्वकोष, जयपुर; रावत पब्लिकेशन।
8. सिंधी, नरेन्द्र कुमार एवं गोस्वामी, वसुधाकर, (2007), समाजशास्त्र विवेचन, जयपुर; राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।
9. दैनिक जागरण 21 जनवरी, 2022.
10. मैकलोन शाऊल (2023) सामाजिक मानदण्डों और सामाजिक मानकों के उदाहरण : सांस्कृतिक मानदण्ड सहित।
11. सिंह, जे0पी0 (2006), समाजशास्त्र : अवधारणाएं एवं सिद्धान्त, प्रेटिंग हॉल ऑफ इण्डिया, नई दिल्ली।
12. https://www.researchgat.hel>2905
13. https://www.theglobalstatistics.com
14. https://www.statista.com>statistics
15. https://www.simplysociology.com>social...

*****